वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च– 2017

* साथ क्या जाएगा?
* अत्यन्त सुन्दर और अति महान
* एक और स्तम्भ ढै ढेरी हो गया
* पंचकूला में सभा
* ईमानदारी हो तो ऐसी

साथ क्या जाएगा?

जयललिता इस संसार से विदा हो गई। वह अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकी, वह शाही तरीके से जीवन बिताने वाली जयललिता, जिसने तामिलनाडू पर राज किया, एक याद बनकर रह गई। वह हजारों एकड़ की मालिक केवल 6 फुट जगह की ही मालिक रह गई। वह एक गन कैरेज में शमशान घाट पर ले जाई गई, जबकि उसके पास गाड़ियों की पूरी fleet थी। खाली हाथ जो कुछ दूसरों के हक अपहरण करके कमाया था, यहीं रह गया।

तरिनोवली में 1197 एकड़, वालेजपेटा में 200 एकड़, ओथूकोटा में 100 एकड़, श्रुधावोर में 25 एकड़, कांचीपुरम में 200 एकड़ और एक फार्म 100 एकड़, अंगूरों का बाग 14.5 एकड़, जीदीमेतला में रेंज रैडी जिला जो तेलंगाना का जिला है, कोदानांद में चाय की Estate 1600 एकड़, और नीलगिरी में बंगला।

इसके ईलावा 24000 Sq.ft. उनके रहने का बंगला, जो वेदा निलियम में peos garden कहा जाता है, उसकी कीमत 100 करोड़। चार व्यापारिक केन्द्र, जो चन्नई में, और हैदराबाद में हैं।

800 किलो चांदी, 25 किलो सोना, 750 जोड़े जूते, 10500 साड़ियां, वा घड़ियां, 2 टियोटा पराडो, एक टैंपो ट्रैवलर, एक टैंपो ट्रेक्स, एक महिन्द्रा जीप बलैरो, एक स्वराज माज़दा मैक्सी और एक कंटैसा। 9 कार और जीपें, जिनकी कीमत 42,25000 है, यह सन 1997 का data है। बेनामी सम्पति कितनी है, उसका कोई हिसाब नहीं।

यह सारी मानवता के लिए यह एक सबक है, जब मृत्यु की घण्टी बजती है, तुम्हें अपने निकट से निकट और प्यारे से प्यारे को भी गुड बाय कहने का अवसर भी नहीं मिलता। कोई तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता, कोई तुम्हें बचा नहीं सकता। न ही वह तुम्हारा हुक्म बजाने वाले कुछ तुम्हारी ज़िन्दगी बचाने के लिए कर सकते हैं। नौकरों की छांवनी होती है, जो उनके आदेशों की पालना करने के लिए सदा सावधान रहते हैं, और वह अफसर जो उनका हुक्म बजाने के लिए तत्पर रहते हैं, भारत वा दुनियां के सर्वश्रेष्ट ब्रेन रखने वाले डाक्टरों की टीम, सर्वोत्म हस्पताल, कोई उन्हें बचा नहीं सका। यह उन लोगों के लिए भी सबक है, जो अपने ग़ल्त तरीकों से अपने घमंडी व्यवहार से दूसरों को दुख पहुँचाते हैं, उन्हें सब कुछ यहीं छोड़ना पड़ता है।

कभी कभी जो आखिर में मुंह में पानी डालने और अन्तिम रीति रिवाजों को पूरा करने के लिए भी अपना कोई खूनी सम्बन्धी नहीं होता।

हमें यह अनुभव करने की आवश्यकता है कि हम केवल यात्री हैं, हमें अपने अगले पड़ाव अर्थात मृत्यु को गले लगाना ही पड़ेगा, इसलिए अपना अंहकार और इससे सम्बन्धित स्वार्थ को छोड़कर अपने वास्तविक रूप को जानने की आवश्यकता है। नेक इन्सान बनें और औरों के लिए हमदर्दी रखें। यदि जय ललिता ज़िन्दा रहती, तो शशीकला के साथ वह भी जेल में होती।

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 3
मार्च 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अत्यन्त सुन्दर और अति महान

इस संसार में कोई वस्तु या हस्ती ऐसी नहीं की जिसके आकार को मापा, जांचा, तोला या उसका नीरीक्षण न किया जा सकता हो। समुन्द्रों की गहराई और उसके तल का नीरीक्षण मनुष्य ने कर लिया है। अपनी धरती के तल वा शिख़र को छू लिया है। सूरज, चन्द्रमा की बनावट, उनका आकार वा रफतार का, उनका पृथ्वी से दूरी का पूरा पूरा माप तोल कर लिया है। रोशनी और आवाज़ की रफतार तक परख़ ली है। सूरज के इर्द गिर्द ग्रहों के आकार, दूरी उनकी रफतार तक पूरी पूरी जांच ली है। इतना कुछ समझ कर मनुष्य ने एक बड़ी सचाई का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया है कि इस संसार में एक हस्ती अवश्य ऐसी है कि जो अत्यन्त अथाह है, असीम है, महां विशाल है, unfathomable है, जिसको कभी भी, कोई भी सदियों तक खोज खोज कर पूरा देख वा जान नहीं सकेगा। वह अस्तित्व नेचर का या विश्व के ब्राह्मण्ड का है।

इसी प्रकार एक और सचाई को जानना और समझना बाकी है, शायद उसे जानने वा हृदय-ग्राही करने (वह भी किसी ऊंचे वर्ग को) अभी सदियां लग जाएं कि नेचर की तरह एक और चीज़ भी है, जिसका अन्त नहीं, वह अथाह है और असीम है, वह है विकास क्रम में प्रगट हुआ महा परम, 6 फुट मनुष्य की ही हस्ती में महा अदभुत और परम महान देव रूप। परम पूजनीय भगवान की पाक देह के भीतर वास करने वाली महा अलौकिक देव प्रकृति भी नेचर की ही तरह पूर्ण अथाह है, अनन्त है, unfathomable है। इस देवरूप को भी सारा सुख अनुरागी मनुष्य जगत कभी भी पूरा पूरा समझ नहीं सकेगा, निहार नहीं सकेगा। उसके पूरे पूरे दर्शन नहीं कर पाएगा। देवरूप का महा रोशन, महा सुन्दर परम हितकर रूप, नेचर ने सुख अनुरागी मनुष्यों की पहुँच से बहुत बहुत दूर रखा हुआ है। मनुष्य के सुख बोध, देवरूप को पूरा पूरा देखने में कभी योग्य नहीं बन सकते, देव रूप जैसी अजब से अजब रोशन शान को पूरा समझने, परखने और जानने के लिए केवल और केवल देव बोध (सुख बोध नहीं) ही नेचर ने सक्षम रखे हैं। देव बोध ही परम रोशन देवरूप को पूरा पूरा निहार सकते हैं, और कोई नहीं।

देवरूप के अनुरागी महा सौभाग्यवान, सर्वोच मनुष्य भी देवरूप के किसी अंश दर्शन करने के अवश्य योग्य होते है, वह भी केवल अपने अनुराग की गहराई की सीमा तक ही, देवरूप को देख सकते हैं, वह देवरूप की अति सुन्दर अति रोशन अपने लिए महा

हितकर झलक को देखकर विस्मत तो हो उठते हैं, हीरे–मोतियों जैसे शब्द बोलने के लिए भी बेबस हो जाते हैं, "देवगुरू के प्रेम को पाकर निर्भय हूँ मैं निर्भय हूँ।" "तुम को मैंने नहीं पहचाना" परन्तु महा विशाल और महा असीम देवरूप की पूरी पूरी झलक को देखने के लिए वह भी योग्य नहीं हो पाते।

देवरूप असीम रूहानी सुन्दरता और असीम रूहानी महानता का समावेश है। परम सुन्दर, परम हितकर देव अनुरागों का भव्य प्रकाश है। देवरूप जो सत्य और शुभ के अनुरागों का और पाप, मिथ्या के वैराग्यों का मिश्रण है, वह देव अनुराग ही असीम है, उनका हर पल बढ़ते जाना अनिवार्य है। उनसे विकसित होने वाले ज्योति और तेज भी असीम हैं। उनका कारज अद्‌भुत, असीम और हितकर है।

गुरूमहाराज के भीतर विकसित देव बोधों की गहराई की सीमा को, उन बोधों के विरुद्ध मनुष्यात्माओं की चिन्तन, सोच, बाणी और क्रिया से लगी चोट और आघात की पीड़ा और दुख को, मनुष्य के बोध कभी भी पूरा पूरा आंकने, जानने और महसूस करने के योग्य नहीं हो सकते।

गुरू महाराज की अद्‌भुत देव बाणी इस सचाई को रोशन करती है: –

"मैंने देव समाज के कई जनों के किसी मिथ्या विश्वास या अपराध या पाप या उनकी हीनता को दिखाने के निमित्त जिस प्रकार का महा संग्राम और परिश्रम किया है, और भिन्न भिन्न तरह से उनकी किसी बुरी छवि को दिखाने के निमित्त अपनी अति मूल्यवान शारीरिक, मान्सिक, हार्दिक शक्तियों को खर्च किया है और इसमें कई समय में एक तरफ किसी शुभ परिवर्तन को न देखकर और दूसरी ओर उनको अपने से फटते या दूर होते या इससे भी बढ़कर अपने किसी अनुचित बचाव के लिए किसी मिथ्या या कपटता या मेरे लिए अपमानकारी बनता, वा पतित होता देखकर और अपने अतिशय और अमूल्य परिश्रमों को वृथा जाता पाकर, मैं अपने हृदय को टुकड़े टुकड़े और अपने स्वस्थ्य को नष्ट और रोगों के उत्पन्न करने और जितने जितने और जिस प्रकार के महा कष्ट–दायक आघात पाए हैं, उनको किसी और के लिए महसूस करना तो एक तरफ, बुद्धि द्वारा उनका अनुमान तक करना असम्भव है।

इस सचाई के साथ कैसे मनुष्य देव बोधों की महानता, सुन्दरता को देखने, समझने और महसूस करने के अयोग्य रहा है, उस विषय में पूजनीय भगवान द्वारा लिखित सारा साहित्य भरा पड़ा है। नीचे एक और देव बाणी दर्ज कर रहे है: –

"ऐसे अनेक संघर्षों और उनके असह्य कष्टों के समय में यह देखकर कि एक तरफ जिन्होंने अपनी महा पापमूलक क्रियाओं के साथ मेरे ऊपर यह सब आघात लगाए हैं ओर मेरी शारीरक सेहत की बहुत बड़ी हानि की है और मेरी शान्ति का अपहरण और मुझे अत्यन्त दुखी किया है, वह मेरी ऐसी दुखिया हालत और अपने पाप कर्मों के फल की ओर से पूरे उपराम और उसके ईलावा मेरे दूसरे पारिवारिक और सामाजिक जन भी, मेरे इन कष्टों की ओर से पूरे अबोधी और बेपरवाह हैं। और मेरे यह कष्ट और दुःख, उनमें से किसी के हृदय को नहीं छूते और मुझे कहीं से कोई हमदर्दी नहीं मिलती, मैंने अपने आपको जन समाज में रहकर भी जैसा अनाद्रित, अज्ञात और उपेक्षित महसूस किया है, उसको मेरे बिना कोई नहीं जानता। इस पृथ्वी पर जहां संसारिक हज़ारों लोगों को अपने एक या दूसरे हार्दिक कष्ट को अपने किसी मित्र और

सम्बन्धी के सामने जाहिर करके कुछ न कुछ हल्का करने का अवसर प्राप्त है, वहां मुझे अपनी आत्मिक विशेषता के कारण, यह अवसर भी प्राप्त नहीं रहा और मैं इस प्रथ्वी पर अपने कहलाने वाले जनों में भी पिछले 38 वर्षों से अपने आपको पूरा पूरा मित्र हीन और अकेला महसूस करता रहा हूँ।

ऊपर महाराज जी ने 1880 से 1918 तक के 38 वर्ष के अर्से का ज़िकर फरमाया है, जबकि श्रद्धेया जी, पंडित जी, श्री हर नरायण जी अग्निहोत्री, श्रीमान भाई मोहन देव जी, श्रीमान बजरंग बिहारी जी, सरदार साहिब सरदार जमीयत सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान पी.वी. कनल जी आदि आदि जैसी महान हस्तियां, उनकी सेवा में सारा जीवन भर विराजमान थे, जिनकी चरण धूल के तुल्य आज हमारे में कोई भी नहीं है। गुरू महाराज के हृदय की तड़प तक पहुँचने वाला, हार्दिक हमदर्दी दिखाने वाला गुरू का असह्य दुख दर्द बंटाने वाला उन जैसा कोई और प्रमाणित नहीं हो सका। देवरूप मनुष्य की पहुँच से कितना ऊंचा हो सकता है? इस सचाई का कुछ उच्च जन अनुमान लगा सकते हैं।

जहां सात्विक महान चांद–तारों जैसी उच्च हस्तियों ने बताया है कि मनुष्य की उत्पत्ति रब, अल्ला के नूर से उपजी हस्ती है, वह नूरी है, जोत स्वरूप है, रोशनी की किरन है, दैवी लाट है, उसका मूल रोशनी और नूर है, वहां देवरूप धारी भगवान देवात्मा ने बिल्कुल अनोखे तत्व बताए हैं। उन्होंने फरमाया है (1) मनुष्य रुहानी पक्ष में पूर्ण अन्धा है, तिमर ग्रस्त है, ज्योति हीन है, वह पूर्ण अन्धेरे का जीव है (2) मनुष्य, आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान से पूर्णता खाली है, पूरा अज्ञानी और बेसुध है। (3) सारी मानवता मिथ्या और पाप ग्रस्त है। पापी और मिथ्याचारी है। हानिकारक हैं, अपनी हानि और दूसरों के लिए हानिकारक बनने के लिए मजबूर है। अच्छे और उच्च जन कम हानिकारक हैं, बुरे और नीच जन बहुत हानिकारक हैं (4) देवरूप ही केवल मात्र उन्हें मिथ्या और पाप से बचा सकता है। और नेचर में कोई ऐसा गुरू, पीर, धर्म अवतार, देवी देवता या किसी भी धर्म के बानी, मनुष्य को उसके मिथ्या और पाप कर्म दिखाकर मुक्ति नहीं दिला सकता। एक मात्र देव रूप ही मनुष्य को पाप और मिथ्या से सच्ची मुक्ति दिला सकता है। इसलिए केवल और केवल देव रूप ही सच्ची मुक्ति दाता है। देवरूप ही अधिकारी आत्माओं के भीतर धर्म के उच्च वा सात्विक भाव जगा सकता है और उन्हें उन्नत कर सकता है। इस प्रकार अधिकारी जन उच्च वा नेक बन सकते हैं। देवरूप ही केवल और केवल अधिकारी मनुष्यों का हित विधाता है ओर हो सकता है, और कोई भी नहीं। आह! मानवता का महा सौभाग्य कि जिसको ऐसे असीम, अत्यन्त महान और परम सुन्दर देवरूप के पूर्ण स्वामी, सच्चा देव प्राप्त हो गया है।

देवरूप कितना कमाल, और अजब जो विकास के क्रम में भारत के ही एक कसबे में आम बच्चों की तरह जन्म पाने वाले, आम साधारण मनुष्य जैसा स्वरूप रखने वाले, साधारण मिथ्या विश्वासी माता–पिता के घर में 6 फुट की इन्सानी मूरत पैदा हो गई, जो उमर के बढ़ते जाने से ऐसा अद्भुत, सर्व्वोच्च रूहानी देवरूप विकसित करने के योग्य हो गया, जिसने 45 वर्ष की उमर तक पहुँचकर ऐसी अनोखी महानता प्राप्त कर ली, और ऐसा देव साहस पैदा कर लिया, कि जिसने न केवल कहलाने वाले पूज्य ग्रन्थों को सरे मैदान छाती ठोककर चैलेंज करने का साहस का स्वामी होकर और स्वामी रहकर जीवन जीया। इस देवरूप धारी ने केवल

हिन्दु संस्कारों के देवतों को ही नहीं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अल्ला, ईश्वर गाड, राम, कृष्ण, पुराने वेदों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत, गीता को ही नहीं बल्कि जैन धर्म, बुद्ध धर्म के बानियों और उनके पूज्य सब धर्म ग्रन्थों, बाईबल, अंजील को काल्पनिक और अवैज्ञानिक धर्मों, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, सिक्ख, आर्या, ब्रह्मों और आगे आने वाले धर्मों को चैलेंज करने का साहस रखने वाला सारे संसार के भीतर यक्ता, केवल और केवल स्वामी बना दिया। विकास क्रम के ऐसे महा अलौकिक परम महा सुन्दर क्रिश्में को पाकर जितना जोश से भर भरकर नाच नाच कर वा गाकर इस नूर और अमृत स्त्रोत को मानवता सजदा कर सके, उतना ही उसमें उसका हित निहित्त है।

जैसे किसी भी पशु को वह चाहे पालतु ही क्यों न हो, घरेलु होकर चाहे सारा सारा दिन रात मनुष्य के पास ही रहता हो, चाहे पालतु जानवरों की तरह अपने मालिक के साथ ही सोता हो, उसे अपने मालिक मनुष्य को पूरा पूरा समझना, जानना और पहचानना असम्भव है, उसी प्रकार किसी योग्य से योग्य, परन्तु चतुर से चतुर, महान से महान वैज्ञानिक को भी देव रूप को पूरा पूरा समझना, जानना और पहचानना असम्भव है। देवात्मा के सेवक समस्त जीवन अर्पणकारी, कर्मचारी, ब्रती कर्मचारी को, देवात्मा के अनुरागी होकर भी देवरूप को पूरा पूरा समझना, जानना वा पहचानना एक असम्भव बात है। देव बोधों और मनुष्य के बोधों के स्तर में फासला और दूरीयां अथाह हैं। महा सौभाग्यवान मनुष्य जो देवरूप को किसी अंश पहचानने के योग्य होते हैं, वह भी किसी समझ या योग्यता से नहीं देख पाते, वह भी इस योग्य होते हैं कि देवात्मा जी की अद्वितीय ज्योति किसी प्रकार उधारी ले लेते है, जितनी देर या समय वह ज्योति मिलती रहती है, उतनी देर ही ज्योति की मात्रा के अनुसार वह असीम देवरूप को निहार पाते हैं। और जब वह ज्योति छिन जाती है, तो दुर्भाग्य से अधूरा, अयोग्य, अपंग मनुष्य ऐसे नियम पूरे करने के अयोग्य हो जाता है, तो मनुष्य फिर अन्धे का अन्धा, जो उसकी वास्तिवक प्रकृति है, वही रह जाता है।

मनुष्य लाख दुनियवी, दिमागी वा नेकी की योग्यताएं रखकर भी रूहानी जगत को देखने वाली आंखों की ओर से पूरी तरह खाली, अति अन्धे हैं। दुनियवी चतुरता, मान्सिक और स्थूल आंखें आत्मा और आत्म जगत को देखने के लिए पूरी तरह असमर्थ्य हैं। समाज में घटित महां दुखांत इस रोशन सचाई को सिद्ध करते हैं।

देव समाज के सन 1897 से जुड़े इतिहास में फिरोज़पुर निवासी बहुत बड़े सरदार साहिब सरदार गुरुमुख सिंह जी ऐडवोकेट को, जो एक समय देवात्मा के विरोधी वकील थे, कुछ देवरूप नज़र आने लगा, उनके लिए सरदारी, वकालत, पैसा, बिरादरी, सुख आराम और संसारिक मान सन्मान का कोई मूल्य न रहा। वह सब कुछ छोड़कर गुरू के चरणों में रहना, उनके मिशन का कारज करना स्वर्ग समझते थे। वह कहा करते थे कि "यदि मेरे गुरू मुझे फिरोज़पुर शहर में सिर पर पिलशी तीलियों के बने रड़के (एक किस्म के झाड़ू) के बण्डल को सिर पर रखकर, मुझे शहर में होका देकर बेचने के लिए कहें तो मैं झाड़ू बेचने के लिए खुशी खुशी तैयार हूं। वह गुरू भक्त सरदार अतर सिंह जी तहसीलदार साहिब को गुरू के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम करते हुए देखकर कहा करते थे, "भाई साहिब, आप हद करते हो, जो भगवान के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करते हो, मैं तो अपना सिर ऐसा नहीं समझता जो उनके चरणों पर रख सकूं। मैं तो फुट

दो फुट दूर ही धरती पर अपना सिर रखकर ही तृप्त हो जाता हूं। देव - चरणों पर अपना अदना सिर रखने का मेरा हौसला (जुर्रत) ही नहीं पड़ता। ऐसी गहरी श्रद्धा के स्वामी अपनी किसी रुचि के विरुद्ध आज्ञा सुनकर, ज्योति तक रसाई के नियम तोड़ बैठे, उन्हें फिर देवरूप दिखना बन्द हो गया, फिर वह गुरू महाराज को देखकर दूसरी तरफ मुड जाते।

बहुत बड़ी योग्यताओं के धनी श्री देव रतन जी साहिब, जो गुरू की रोशनी की झलक में गाते थे "सुरक्षित हूं मैं हे भगवान, तुम्हारे हाथ में आकर, नहीं सम्भव मेरी रक्षा, कहीं तुमसे परे जाकर" महा बदकिस्मती से वह रोशनी तक रसाई का नियम भंग कर बैठे और समाज के दुखांत के भागी होकर, गुरू महाराज को 24 वर्ष जो कुछ देखते रहे, उसको बिल्कुल ही देखने के अयोग्य होकर भयानक रूप से गुरू विरोधी होकर इस संसार से गए। मनुष्य की औकात यह है।

"अतिशय रूप महान, देवगुरू भगवन का"

बलदेव सिंह

एक और स्तम्भ ढै ढेरी हो गया

"लैण जो तेरा नाम, तिनां दे सद कुर्बाने जाऊं"

19 दिसम्बर 2016 को देव समाज भवन 36 - बी, चण्डीगढ़ में देव समाज के पूजनीय रचता का एक और नाम लेवा उनके मिशन में सारी उमर जुझारु रहने वाला, और सचमुच अपनी मनुष्य रूपी योग्यता के अनुसार कुर्बान होने वालों की कतार का लगभग एक आखरी स्तम्भ (भाव बहुत सन्मान के योग्य माननीय श्रीमान पंडित गिरवर प्रसाद जी) सदा के लिए लुढ़क गया और सदा सदा के लिए खाक़ में मिल गया। वह अपना मानस जन्म, जितना सम्भव था, संवार के गए हैं। गुरू मिशन की विशेष कुर्बान - गाह पर एक बड़ी कभी न पूर्ण होने वाली क्षति कर गए।

माननीय श्रीमान जी, जिनके पिता रंगपुरी निवासी थे और रुड़की के पास श्री पंडित परमानंद जी इंजनियर थे, जो भरी जवानी में अचानक, शादी से थोड़ी देर बाद अपनी पत्नी को विधवा, और इकलौते पुत्र को यतीमं छोड़ गए। श्रीमान जी की विधवा मां ने अपने पिता के घर, जो पटवारी या कानूनगो थे धूल सरस (जो दिल्ली के निकट गांव है) में परवरिश पाई। श्रीमान जी जवान उमर तक वहीं रहे और पढ़ते रहे। श्रीमान जी ने दिल्ली यूनिवर्सटी से 1939 में B.Sc. की परीक्षा यूनिवर्सिटी में फस्ट रहकर, गोल्ड मैडल लेकर पास की। फिर M.A. Math भी पास की।

श्रीमान जी का जन्म अच्छे ब्राह्मण कुल में होने के कारण मोटे पापों से बचने की, और धार्मिक प्रकृति विरासत में मिली थी। धन का प्रेम, दुनिया की वाह वाह, नाम यश आदि कभी आपके जीवन का लक्ष्य नहीं बन सके। M.A. पास करके 1942 ई० में उनके ऊपर स्वामी विवेकानन्द जी का कुछ प्रभाव पड़ा। उन्हें कोई रोकने, टोकने वाला नहीं था, इसलिए साधू बनने के लिए वह तीर्थ भ्रमण के लिए निकले। कुछ देर हरिद्वार, ऋषिकेश आदि अन्य तीर्थों का भ्रमण करते हुए, काफी समय बाद धूल सरस पहुँचे।

उनके नाना जी को देव समाज का पता था उन्हें देव समाज के यक्ता मिशन के कारज का भी पता था। 1939 में श्रीमान हरीचन्द जी महता जो स्वयं भी B.com थे, उन्हें सेवक भी बना दिया था। इसलिए उनके धार्मिक झुकाव को देखकर, जब श्रीमान जी पूरे यौवन पर थे वह अप्रैल 1942 में मोगा विकासालय में लेकर पहुँचे। उस समय उन्होंने साधू सन्तों जैसा वेश बनाया हुआ। था। एक मोटा सोटा और हाथ में लोटा था। विकासालय की उस समय की जादू भरी संगत ने उनको सदा के लिए भगवान देवात्मा के चरणों का पक्का मुरीद बना दिया। उसके बाद देव समाज में 18 वर्ष तक टिके रहे। भगवान रचित पुस्तकों की परीक्षा को Top रहकर पास किया। (जो धर्मबीर जी के बाद आपने ही इतने नम्बर प्राप्त किए थे) विकासालय का कोंस पास किया और अपना जीवन गुरू मिशन में भेंट कर दिया। देव समाज के उप - कर्मचारी बन गए और फिर देव समाज प्रबन्ध के भी जोशीले मैंबर बन गए। बड़ी ज़ोरदार सभाएं कराने और प्रचार के दौरे करने लगे। उनकी सोच और दिलचस्पी देव समाज के काम को दिल्ली की ओर फैलाने की बन रही थी। उन्होंने आगे बढ़कर आनन्द पर्वत दिल्ली के एक विशाल हाई स्कूल में बहुत शानदार महोत्सव 1954 - 55 में मनाया। हज़ार से अधिक यात्रियों के लिए बहुत बढ़िया खाना फ्री रखा गया। देसी घी का प्रयोग किया गया। देव समाज के विशेष सेवक जगदीष चन्द्र जी (घी वालों) ने सारा खर्चा उठाया। फिर पहले शाहदरे और फिर फरीदाबाद में ज़मीन खरीदी। कुछ कमरे भी फरीदाबाद में बनवाए। बहुत संग्राम किया। धर्म र्माग के योग्य मुसाफिरों के र्माग में हमेशा अड़चने, विघ्न, रूकावटें आती हैं। 1959 - 60 में आपका मन उखड़ गया। आप उस समय नौजवान लीडिंग प्रचारक थे। आपको सब नौजवान प्रचारकों का सहयोग प्राप्त था। श्रद्धा की जगह दूरी हो गई और आखिर वह अपने समेत, पांच नौजवान पढ़े लिखे कर्मचारियों के साथ समाज को छोड़कर 1960 में अलग होकर गुड़गावं में अपने स्वैध्याय केंद्र बनाकर काम करने लगे। उनका यह क़दम ग़ल्त सिद्ध हुआ, जिसको वह और उनके साथी महसूस करते रहे। इस दौरान उन्होंने शादी करवाई, B.Ed. पास की और एक प्राईवेट स्कूल में टीचर रहे। फिर 12 - 13 वर्षों के बाद प्रबन्ध की ओर से प्रेरणा किए जाने पर, मोगा लड़कों के सीनियर सैंकण्डरी स्कूल में प्रिंसीपल बना दिए गए। उनका फिर समाज के साथ नाता जुड़ता गया और अटूट हो गया, जैसे सूखे रेत पर तड़पती हुई मछली को फिर खुला जल स्त्रोत मिल गया।

मनुष्य के भाव सदा अपनी तृप्ति के लिए उसे घसीटते हैं, जैसे भाव होते हैं, वह उसे अपनी तृप्ति में लगाकर ही छोड़ते हैं। श्रीमान जी को बहुत गहरी धार्मिक प्रकृति मिली थी। श्रद्धा और जिसमानी हमदर्दी के अच्छे भाव मिले थे। Time is a great healer, समय हृदयों के ज़ख़्म और दूरियों को मिटा देता है। श्रीमान जी ने उस समय के पाक वातावरण में आकर ही राहत प्राप्त की।

मोगा में लड़कों के स्कूल की बहुत उत्तमता और मेहनत से सेवा करके, फिर प्रचार विभाग, साहित्य विभाग में पूरे जोश से कार्यरत हो गए। श्रीमान जी की धर्म पत्नी माननीय श्रीमति सत्यावती जी सीकरी को पाना उनका बहुत बड़ा सौभाग्य था। वह बहु - पक्षिय बहुत ही उच्च जीवन की मालिक थी। उन्होंने अपने क्रियाशील जीवन में देव समाज के कर्मचारी से कभी

कम काम नहीं किया। उनके सहयोग वा मार्ग दर्शन ने श्रीमान जी को सदा धर्म-मार्ग पर साक्रिया रखवा। कभी इधर उधर नहीं होने दिया।

श्रीमान जी का जीवन बहुत संर्घष भरा जीवन रहा है। अपनी सेहत और अपनी धर्म की सेहत का संघर्ष, परिवार और बिरादरी के साथ संर्घष, अजीविका कमाने के लिए संघर्ष, समाज के कारज के लिए संघर्ष के काडों से उनकी जीवन पुस्तिका भरी पड़ी है।

श्रीमान जी की शादी होने से कई संघर्ष ऐसे ही खड़े हो गए। सन 1950 के लगभग श्रीमान जी की उमर का 34-35 वां वर्ष चल रहा था। वह बहुत सुन्दर और आकर्षिणीय स्वास्थ्य रखते थे। नौजवानों में से सबसे ज़्यादा शिक्षित थे। प्रचार और सभाओं की बड़ी योग्यता और लगन रखते थे। इसलिए नौजवान सेवकों और कर्मचारियों के हरमन प्यारे नायक थे। समाज में उच्च पदवी पर आसीन थे। उनकी वर्तमानता बहुत गौरवशाली थी। समाज में सेवकों के एक नेता के रूप में उभरे थे। हर एक का मन उनकी नज़दीकी की इच्छा रखता था। उनकी इतनी उच्च शिक्षा रखकर, गुरू मिशन के लिए कुर्बानी एक विधवा मां की इकलौती सन्तान होकर, सब नेक दिल इन्सानों को उनके प्रति हृदय झुकाने के लिए मजबूर करती थी।

संसारिकता के तौर पर उनके प्रासपैक्टस बहुत ऊंचे थे। उनकी उच्च शिक्षा उनकी बहुत अच्छी कमाई का साधन बन सकती थी, अच्छा दहेज लाने वाली लड़की आसानी से मिल सकती थी। लेकिन अपने विचारों के मेल को सन्मुख रखकर जब उन्होंने शादी की तो उनके लिए कई चुनौतियां खड़ी हो गई। पहले तो सत्कार योग्य सत्यवाती जी सीकरी, पंडितों की लड़की नहीं थी। श्रीमान जी का परिवार बहुत पुराने विचारों का था। किसी प्रकार भी पंडिताई ख़्याल रखकर इस सचाई को स्वीकार नहीं कर सकते थे।

उनकी बिरादरी, विशेषकर उनकी माता के लिए यह बज्रपात सिद्ध हुआ। वह अपनी 85-86 वर्ष उमर तक ऐसी लड़की को घर में रखने को तैयार नहीं हो सकी। उच्च शिक्षा, कोई दाज दहेज या आर्थिक सहायता वाली तो कोई बात ही नहीं थी। बल्कि एक अलग ही किस्म का भार और ज़िम्मेदारी जो उन्हें दहेज में मिली, वह अलग अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती थी।

बीबी सत्यवती जी ने शादी के लिए तभी हां की जब श्रीमान जी ने उनकी एक पगली, महा अधूरी, एक तरह से पिंगली सी छोटी बहन विद्या जी की सेवा सुरक्षा की, खान, पान ईलाज की सारी ज़िम्मेदारी लेने के लिए हां की और दिल से इसकी स्वीकृति दी। शादी में दहेज में एक नीम पागल, अपाहिज और रोगी बच्ची उमर भर के लिए सम्भालने की ज़िमेवारी श्रीमान जी को मिली थी। जो श्रीमान जी ने पूरी तरह, हर हालात में निभाई।

बेशक श्रीमान जी की शादी पर बिरादरी का सदा ही नकारत्मिक रवैया रहा और माता का संसारी हृदय टूट गया। जिस विधवा माता के लिए देव समाज में आकर आपके भीतर श्रद्धा और हमदर्दी भरे सेवा के भाव जाग चुके थे, जिनके चरणों की सेवा करने में श्रीमान जी बहुत गहरा सुख अनुभव करने लग गए थे, उस माता के उमर भर के स्वप्न चकनाचूर हो गए। वह अपने संस्कार-वश अपनी उच्च गुण धारी इकलौती बहु को किसी कीमत पर भी अपने पास रखने और अपनाने के लिए तैयार नहीं हुई। श्रीमान जी का अधिकतर ग्रहस्य जीवन रंगपुरी से दूर और मां से भी

दूर रहकर बहुत कुछ बीता।

जैसे पहले ईशारा कर चुके हैं, हीरे की कदर जौहरी को ही हो सकती है, जिस उच्च जीवन के श्रीमान जी खोजी और मुसाफर थे, श्रीमान जी को यह साथ बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ, क्योंकि उनकी जीवन साथी की झोली, उच्च जीवन के भावों की दुर्लभ दौलत से श्रीमान जी से भी अधिक भरी हुई थी, इसलिए उनके इस सफर में बहुत ही ठोस और सूझवान मार्ग दर्शन की सहायता मिलती रही। इस सम्बन्ध की तह में श्रीमान जी के श्रद्धा और हमदर्दी के भाव भी थे।

श्रीमान जी सब नौजवान, विकासार्थियों, पढ़े लिखे सेवकों और कर्मचारियों के प्रति बड़ा ही स्नेह भरा, हमदर्दी भरा व्यवहार रखते थे। शायद ही ऐसा कोई विकासार्थी या नौजवान कर्मचारी होगा, कि जिसके लिए आपने बहुत उत्साह भरी आर्थिक, भावनात्मिक और शारीरिक सेवा न की हो। उन्होंने एक बार दिल्ली साधन स्थान में मुझे शायद आर्थिक तंगी में देखकर 400 रूपये सन 1952 में बहुत ज़ोर पाकर दिए, जो मैंने 2 - 4 दिनों में हाथ बांधकर वापिस कर दिए। उन्होंने मुझे बहुत लम्बे 15 - 15 या 20 - 20 सफे के अंग्रेजी में पत्र लिखे, कई वर्ष वह मुझे उत्साहित करते रहे कि मैं जल्दी गुरू मिशन में आकर जीवन भेंट करूं। उनकी प्रेरणाएं बहुत ज़ोरदार थी। उनके एक नये रंगरूट के लिए बहुत बहुमूल्य हौसला वा उत्साह देने वाले थे। वैसे उनका जीवन भेंट करना और गुरू मिशन के लिए कुर्बान होना, अपने आप में मेरे ऊपर सदा एक दुर्लभ उपकार है।

वह अपनी माता के लिए बड़ी श्रद्धा रखते थे, जो अभी मेरे पिछले और जंगली हृदय में पैदा नहीं हुई थी। शायद सन 1951 - 52 में पहली बार देव समाज की पार्टी ने पाकिस्तान जाने की तैय्यारी की थी। हमारे पासर्पोट तैयार किए गए। वीज़ा आदि के लिए ज़रूरी कागजों पर सरदार सरमुख सिंह जी pleader साहिब के साईन करवाने के लिए, हम विकासालय से ढिल्लों अगवाड़ उनके घर की ओर जा रहे थे। मैं अनघड़ ही था। मैंने श्रीमान जी को चलते चलते पूछा कि श्रीमान जी देव समाज में मां को इतना महत्व क्यों दिया जाता है, इसका कारण क्या है? श्रीमान जी ने जो मुझे लताड़ते हुए उत्तर दिया, जिसके साथ मैं ठिठक गया, वह मुझे आज तक याद है। "कि तूं तो बड़ा बहरूपिया है। हमें तो बड़े झुक झुकके मत्थे टेकता है, हमने तो तुम्हें कभी चूरीयां नहीं खिलाई, कभी हलवे पूरी नहीं खिलाए", मैं शर्मिन्दा सा हो गया, पर उनके दिए जबाव की मुझे कुछ समझ नहीं आई।

श्रीमान जी ने पूरे जोश और जोर से प्रचार किया, प्रचार के लिए बहुत दौरे किए। वरिष्ट धर्म सम्बन्धी श्रीमान रूपचन्द जी उनके जोड़ीदार, प्रशंसक वा श्रद्धावान थे। वह उन्हें अपनी जीप में साथ दौरे करवाते। उत्सवों, महोत्सवों और सोलन सत्संग में ज़ोरदार हृदयों को हिला देने वाली सभाएं कराते रहे। प्रचार द्वारा बहुत जनों के प्रेरणा - पुंज बने, बहुत जनों के भले के लिए ज़ोरदार संग्राम द्वारा उनका भला करके जहां तक सम्भव था, अपना जीवन सफल कर गए। कई सामाजिक परिवारों के विशेष निकटी और श्रद्धाभाजन रहे। उनका भला करते रहे। अपने घर में भी सत्संग रखकर सेवाकारी होकर तृप्त होते थे।

मोगा, फरीदाबाद, गुड़गांवों, अम्बाला, रंगपुरी, मंडीफूल, भटिंडा, श्री अकबरपुर, कानपुर आदि स्थानों पर ठहरकर विशेष सेवाएं की और प्रचार का काम

किया।

उनके त्याग, जीवन और सभाओं के परिणाम ऐसे होते रहे, जिनसे देव समाज का गौरव सदा महान होता रहेगा। केवल उनके प्रचार की एक ही घटना लिख रहा हूं। उनके एक सहपाठी थे विष्णुदत्त जी शर्मा M.A. दोनो कें भीतर पढ़ने के दिनों में देश सेवा के विचारों पर चर्चा होती रहती थी। दोनों देश सेवा करने की मन में भावना रखते थे। श्रीमान जी तो देव समाज में आकर प्रचारक बन गए। विष्णुदत्त जी पुलीस अफसर बन गए। वह अम्बाला जिले के थाने में लगे हुए थे। बहुत वर्षों के बाद इतफाक़ से श्रीमान जी को मिल गए। इनका जीवन और प्रचार देखा। बहुत प्रभावित हुए। श्रीमान जी ने उनसे पूछा कि विष्णु दत्त पुलीस का महकमा तो बहुत बदनाम है, वहां खूब रिश्वत चलती है, तेरा क्या हाल है? विष्णुदत्त जी को बहुत सुन्दर विरासत मिली थी। उन्होंने सरलता से बताया कि भाई मैंने तो रिश्वतें ली हैं। श्रीमान जी ने पूछा कि वह पैसे कहां हैं? विष्णुदत्त जी ने कहा कि वह तो मैं दिल्ली अपनी पत्नी को दे आया हूं। श्रीमान जी ने ऐसा प्रभाव डाला कि वह दिल्ली जाने को मजबूर हो गए और पूरी रक्म अपनी पत्नी से लेकर वापिस श्रीमान जी के पास आ गए। श्रीमान जी या कुछ और साथी भी विष्णुदत्त जी पुलीस इन्सपैक्टर, शायद सब इंन्सपैक्टर भी उन गावों में गए और उन गरीब जनों को बुला बुलाकर दुखी दिल के साथ उन गरीबों की खून पसीने की कमाई वापिस की। उन गावों में जो स्वर्गीय दृश्य पैदा हुआ, जब मज़लूमों ने आसमान की ओर हाथ उठाकर कहा, "आह! यह तो सत्युग आ गया है, थानेदार भी क्षमा मांगकर रिश्वत वापिस कर रहे हैं" जिस प्रकार परम पूजनीय भगवान की सच्ची महिमा का प्रकाश हुआ, उसका नेक हृदय अनुमान लगा सकते हैं। विष्णुदत्त जी इस क़दर प्रभावित हुए कि उन्होंने पुलीस की नौकरी से इस्तीफा दे दिया। एक एक उच्च भावों की घटना, हमेशा किसी न किसी स्वर्गीय सुन्दरता का स्त्रोत बनती रहती है। यह सब कुछ अद्वितीय गुरू महाराज के अद्वितीय देव प्रभावों का एक छोटा सा नमूना है।

श्रीमान जी को जल्दी ही देव समाज की उस समय की सच्ची सत्संग में आकर माता का अति उपकारी रूप नज़र आने लगा। वह हमेशा के लिए माता के भगत बन गए। और सेवाओं और दुख सुख का ख़्याल रखने के साथ, वह हमेशा उनकी चरण - सेवा करके तृप्त होते रहे। जैसे बताया गया है कि उनकी दूसरी बिरादरी में शादी होने के कारण माता की हसरत पूरी नहीं हुई थी, अपनी इकलौती बहू को कभी अपने घर में नहीं आने दिया, जैसे देश निकाला ही दे दिया। यह बनवास लगभग 24 - 25 वर्ष तक चला। उनकी देवी जैसी बहू सत्यवती जी सीकरी अपनी इस माता को दिल दिल में मां की तरह पूजती रही। अपने पति को उनकी भरपूर सेवा के लिए प्रेरित करती रही और उनको पूरा पूरा सहयोग दिया। उनके लिए वस्त्र, स्वैटर, मफलर, जुराबें आदि अपने हाथ से बुनकर चुपचाप श्रीमान जी के हाथ भेज देती थी। श्रीमान जी माता को बिना बताए चुपचाप देकर ही तृप्ति पाते थे। मोगा स्कूल के प्रिंसीपल के पद से रिटायर होकर श्रीमान जी गुड़गांव में देव समाज के नये बने स्कूल की देख रेख कई वर्ष करते रहे। वहां से रंगपुरी बहुत निकट था, इसलिए श्रीमान जी तकरीबन रोज़ की तरह ही माता जी को आसानी से मिल आते थे। माता जी की उमर 85 वर्ष या इससे भी कुछ अधिक हो गई थी। उनकी

दवा दारू वा सेवा देखभाल की ज़रूरतें बढ़ती गई। वह उनके ज़्यादा ढीले होने पर किसी प्रकार मनाकर गुड़गांव ले गए। माता जी 96 वर्ष तक जीती रही। उनकी फरिश्ता तासीर बहू को मां देखने को मिल गई। उन्होंने श्रद्धा, सत्कार, हमदर्दी वा शुक्रगुज़ारी के भावों से भरकर चुपचाप सेवा की बारिश कर दी। वृद्ध और रोगी माता का हृदय पसीज गया, श्रीमान जी और विशेषकर सत्यावती जी अपने हाथों से उन्हें नहलाती, उनके पैर धोती, खुराक का ख़्याल रखती, स्नेह भरे हृदय से उन्होंने पूरी सेवा की। गहरे ज़ख्म भरे माता के दिल को उन्होंने जीत लिया। मां के भीतर की घृणा वा दुख शान्त हो गए। प्यार और स्नेह का स्त्रोत फूट पड़ा। मां अपने कठोर और कड़वे व्यवहार के लिए दुखी होने लगी। वह बार बार कोई 30 वर्ष के बाद अपनी देवी जैसी बहू को रंगपुरी में लेकर गई। मां ने बिरादरी में अपने मरने से पहले जो अपनी बहू का गुणगान किया, वह सब फरिश्तों के देखने की चीज़ थी। आख़िर 96 वर्ष की उमर में पति पत्नि ने अथाह सेवा, प्यार और सत्कार के साथ वियोग भरे हृदय से सदा के लिए विदा किया।

श्रीमान जी ने अपना अधिकतर समय घर से बाहर रहकर आर्थिक संकटों और गरीबी में ही बसर किया, बेशक उन्हें पैसे की उचित क़दर तो जागी, परन्तु पैसा उनके लिए आम भूखी जनता की तरह दिल का सरताज कभी नहीं बना और उनके जीवन का लक्ष्य कभी नहीं बना, न कभी वह किसी प्रलोभन में आए। परन्तु एक समय आया कि श्रीमान जी काफी अमीर हो गए। गुड़गांव और दिल्ली की निकटता के कारण, श्रीमान जी जो कुछ ज़गीन के मालिक थे, वह सोने के भाव बिकने लगी, श्रीमान जी के हाथ मे ईमानदारी से लाखों रुपये कैश एक दम हाथ लग गए। यह हवा के बहाव की तरह आई अमीरी ने श्रीमान जी पर थोड़ा सा भी प्रभाव नहीं पाया। उनकी निजी जीवन शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। उन्होंने बहुत सुलझे और विशाल हृदय से अपने नौजवान पुत्र नीरज को पास बिठाया और समझाया कि बेटा, तुम अच्छी सरकारी नौकरी पर हो, अब हमें अपने बजुरगों की जायदाद से इतने लाख कैश मिला है, मैं खुशी खुशी इसका आधा हिस्सा तेरे हवाले करता हूं, जैसे तेरा दिल चाहे, तुम इसका प्रयोग करो ओर बाकी आधा मैं रखना चाहता हूं। उस पर तेरा कोई हक़ नहीं होगा। उसे मैं अपनी मर्जी से जहां भी इस्तेमाल करुं उसमें तुझे कोई एतराज़ नहीं होना चाहिए। परन्तु यदि तुम कभी इधर उधर से इसमें विघ्न डालोगे तो मुझे उसकी परवाह नहीं। क्योंकि मेरे जीते जी इस पर मेरा ही हक होगा। इस अति दूरदर्शिता के फैसले को दोनों पिता पुत्र ने स्वीकार किया और उस पर पक्के रहे। और पैसा कभी इन दोनों के बीच लड़ाई झगड़े का कारण नहीं बना।

श्रीमान जी के प्रति सदा सदा श्रद्धा से भरकर सिर झुकाने वाले उनके जीवन के दो मुख्य पहलू हैं, जो सदा सदा अधिकारी हृदयों को उनके आगे झुकाने से उनका भला करने वाले प्रमाणित होंगे। यह इसलिए हुआ कि श्रीमान जी ने इस प्रकार विरासत में मिली कीमती दौलत को किस प्रकार इस्तेमाल किया।

उनकी श्रद्धा ने उनको गुरू को याद कराया, गुरू से पाई बरकतों की वर्षा को याद कराया और गुरू की मक्के, मदीने जैसी भूमि श्री अकबदपुर का स्थान याद आया और उनकी श्रद्धा ने वहां पर अद्वितीय किरदार, करने का संकल्प लिया, जो 100 वर्ष से ऊपर के देव समाज के इतिहास में किसी श्रद्धावान

की सोच में नहीं आया था। उनकी श्रद्धा ने उपरोक्त दौलत का बहुत बड़ा भाग श्री अकबरपुर में, जहां गुरू महाराज की हवेली को बाज़ार से, सड़क सीधी होती है, वहां एक यादगारी, शानदार, चौड़ा और ऊंचा संगमर के स्तम्भ बनाकर विशाल देव द्वार का निर्माण कर दिया, यह करके विशेष तृप्ति पाई। सारी उमर अपनी इस उपलब्धि का ढिंडोरा नहीं पीटा। यह देव द्वार श्रीमान जी की अपने गुरू प्रति श्रद्धा का ठोस प्रतीक है। जो एक ब्राह्मण पुत्र ने अपने गुरू प्रति दर्शाई। इस जज़बे को लाखों बार प्रणाम है। " लैण जो तेरा नाम, उहना दे सद् कुर्बाने जाऊं"

बाकी की रही सही पूंजी उन्होंने गुरू महाराज के सभी पूजनीय ग्रन्थों और उनकी शिक्षा से भरपूर, प्यारी बीसियों किताबों को श्रद्धा से भरकर सुन्दर आकार में छपवाया। दिल्ली की बसों पर बार बार प्रैसों में जाना, बार बार प्रूफ पढ़ना उनको स्टोर करने के लिए विशेष मन्दिर के रूप में कमरा रंगपुरी में बनाना, इस प्रकार ठोस काम करने के लिए उन्होंने अपना बहुत सारा जीवन भेंट चढ़ा दिया, इस प्रकार अपना जीवन सफल किया और आने वाली नसलों पर बहुत बड़ा उपकार किया।

जैसे बताया गया है कि श्रीमान जी B.Sc. में दिल्ली युनिवर्सिटी में फर्स्ट रहे और गोल्ड मैडल हासिल किया। इतनी बड़ी प्राप्ति का कारण था कि वह अध्ययनशील थे। वह आख़िरी दम तक अध्ययन करते रहे। इस अध्ययन द्वारा उन्होंने बहुत मात्रा में लेखों का संग्रह किया और उन लेखों को किताबों की शक्ल में छापा। यह नया काम उनकी उपलब्धियों में और शुमार हो गया। उन्होंने मानव-मूल्य, जीवन मूल्य, सात्विक मूल्यों की घटनाएं इकट्ठी करके पुस्तकें छाप दी। माता- पिता, बहन भाई, पति पत्नि के सम्बन्धों में उच्च परिवर्तनों की घटनाएं संग्रह करके कई सुन्दर पुस्तकें छपवाई। श्रद्धेय कनल जी के लेखों की लड़ियों को इकट्ठा करके सब पुस्तकों के रूप में छाप दिया।

अंह के भयानक रूप को दर्शाने के लिए पुस्तक बना दी। पुरानी फाईलों के अध्ययन से मैटर लेकर उन्हें पुस्तकों का आकार दिया। हृदय-परिवर्तन की अमूल्य घटनाओं को जोड़कर मानवता का निर्माण जैसी पुस्तक बना दी। भगवान की जीवन कथाओं के तीन नये भाग बना दिए। नई और अति हितकर पुस्तकों की जैसे वर्षा कर दी जो मानव जगत पर बहुत बड़ा उपकार है।

धर्म समाजें भी परिवर्तन के नियम के पूरी तरह अधीन हैं। देव समाज भी अपने मूल कदर कीमत, अर्थात नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने के मूल लक्ष्य के लैवल वा स्तर के लिहाज़ से परिवर्तित होती आई। ऐसा होना अनिवार्य था। जो स्तर गुरू महाराज की वर्तमानता में, श्रद्धेया जी, पंडित परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के समय था, वह उनके बाद में नहीं रहा, और जो जीवनों में परिवर्तन का कारज श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी, श्री कनल जी, श्रद्धेय भाई मोहन देव जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के समय में हुआ, वह उनके बाद न हो पाया। उनके बाद समाज में अपना नीच मिटाने, वा उच्च जीवन प्राप्ति करने औरों में यही काम करने का लक्ष्य न रहा। राजनीति, सत्ता, पद प्रभुत्त, पैसा मुख्य हो गया। कुछ साथी इस लक्ष्य में अड़चन डालने वाले समझकर उनकी ज़रूरत न रही। उनको समाज से निष्कासित किए बिना मनोरथ पूर्ति कठिन हो गई। समाज में विघटन हो गया। परन्तु क्योंकि माननीय

श्रीमान गिरवर प्रसाद जी का लक्ष्य नहीं बदला था, वह किसी पक्ष के भी पक्षपाती न रहे। निष्कासित जनों को आख़िर तक मिलते जुलते रहे। उनके साथ मिलकर वर्षों तक काम करते रहे। अपने प्रचार में उनका सहयोग पाकर खुश होते रहे। वह उन्हें अपना और अपने आपको उनका समझते थे। उनको प्रेरणा देकर कई पुस्तकें छपाने के कारज में सहायक होते रहे। उनके लिए सब गुरू का नाम लेवा रहे। सबके साथ सुहृयता रखी।

इस सुहृदयता का विशेष रूप से उस समय पता लगा, जब उनकी धर्म पत्नि जी का देहान्त हो गया। पंडित जी को अपनी धर्मवान और योग्य पत्नि के लिए गहरा सत्कार था। पत्नि जी अपनी आख़िरी इच्छा व्यक्त कर गई कि उनका श्राद्ध कहलाने वाले विरोधी घड़े के एक कर्मचारी करवाएं, श्रीमान जी ने कुछ पद-धारियों को मना लिया और उनकी धर्म पत्नि जी का श्राद्ध दोनों समाजों के जनों ने मिलकर फरीदाबाद में सम्पन्न किया। आम मनुष्यों से पंडित जी का दिल कुछ भिन्न था। ऐसे व्यक्तित्व की विदायगी पर जितना सत्कार से भरकर नमन करें उतना ही थोड़ा है। वह अपनी योग्यता अनुसार अपना जीवन सफल कर गए। ऐसी मुबारक हस्ती को बार बार प्रणाम करते हैं।

वह अपने 36-बी देव समाज भवन में टिकाने के बारे में हंसकर कहा करते थे, "अब तो परलोक निकट है, और आसान है।"

उनका एक उपकृत साथी
बलदेव सिंह

बागे दुनिया का नज़ारा चन्दरोज़, है जमाने में गुज़ारा चन्दरोज़।
हैं मुसाफर हम सरा में जगत की, साथ है इसमें हमारा चन्दरोज़।
है यहां हर चीज़ फानी दोस्तो, खेल है दुनिया का सारा दोस्तो।
दोस्त और मित्र जुदा हो जाएंगे, है प्यारा भाईचारा चन्दरोज़।
रह सके कितना वक़्त बतलाईए, या सिकन्दर और दारा? चन्दरोज़।
दुनयावी सामान सब छिन जाएंगे, मालोज़र का है सहारा चन्दरोज़।
मालोज़र है सब यह नेचर का जनाब, है मिला तुमको उधारा चन्दरोज़।
धर्म की दौलत कमालो रात दिन, है यहां डेरा हमारा चन्दरोज़।

प्रचार प्रोग्राम

1) मल्लेका (सिरसा) 9 मार्च रात से 12 मार्च 2017 सुबह तक
2) गंगानगर: 12 मार्च रात से 15 मार्च 2017 सुबह तक
3) पदमपुर : 15 मार्च रात से 20 मार्च 2017 सुबह तक

मन्त्री

पंचकूला में सभा

5 फरवरी ईतवार 2017 में पंचकूला में श्रीमान सुभाष जी अग्रवाल और उनके सपुत्र श्री मनीश जी अग्रवाल (जो श्रीमान बाबू धर्म रतन जी के पुत्र और पोते हैं) के अपना नया मकान न० 1365 सैक्टर 21 पंचकूला में बनाने की खुशी में विशेष सभा रखवाई। इस सभा के लिए अपने सब रिश्तेदारों, स्नेहियों वा धर्म सम्बन्धियों को निमन्त्रण दिया। लोकल पंचकूला, चण्डीगढ़, दड़वा को छोड़कर भटिंडा, धूरी, गोबिन्दगढ़ आदि अनेक स्थानों से उनके अधिकतर रिश्तेदार, कोई लगभग 200 के करीब जन पहुँचे। उनके घर के पास ही एक मन्दिर के हाल में सभा रखी गई।

हाज़रीन को पहले बहुत बढ़िया नाश्ता करवाया गया, हाल में बहुत अच्छी बिछाई की गई। बहुत गिणती में कुर्सियां लगाई गई। गुरू महाराज की छवि को रखने का उचित प्रबन्ध किया गया। 11 बजे हाजरीन सभा में पहुँचने शुरू हो गए।

कुछ देर बाद श्रीमान जगदीष जी ने "हमारे पूजनीय सत्गुरू " नामक भजन का गान किया। गुरू महाराज का छवि द्वारा अर्चन किया, देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की और फिर एक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने सब की तरफ से सुभाष जी और उनके परिवार को नये मकान की बधाई दी। बताया कि मकान हमारा सम्बन्धी है, इसे स्वच्छ और सुन्दर रखना है, इसको शुद्ध रखना है, कोई ऐसा काम न हो, जो इसको अपवित्र बनाए। यह हमारा उपकारी है। इसमें सद्भाव से रहें, कलह क्लेश न हों। घर में इतना समान न रखें, जिससे शुद्ध हवा और रोशनी न आ सके। गुरू महाराज की छवि के लिए अवश्य स्थान रखें।

आगे बताया कि मनुष्य की मिथ्या और कल्पना भरे विश्वास दो शत्रु हैं। बताया कि हम उच्च और नीच सम्बन्धों में बनते हैं। जिसके सम्बन्ध खराब हैं, उसका जीवन खराब है। दूसरों को हानि पहुंचाने से हम अपने को हानि पहुँचाते हैं। दूसरों की सेवा करने से हम बेहतर बनते हैं।

गुरू महाराज ने अच्छे सम्बन्धी बनने का गुरु बताया है, "उच्च भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिन तब जाओ।"

सभापति जी ने बताया कि चार उच्च भाव पैदा करने से सम्बन्ध स्वर्गीय बनते हैं। श्रद्धा, कृतज्ञता, दया और अपनी नीचता को देखना और अपने विरुद्ध सुन सकना, अपनी नीचता दिखाने वाले को धन्यवाद देना। श्रद्धा, कृतज्ञता को घटनाओं द्वारा विश्लेशन हृदय - स्पर्षीय शब्दों में किया। माता - पिता, बहन भाई, पति पत्नि के अच्छे सम्बन्ध के बहुत सुन्दर उदाहरण पेश किए। नये जन सब बहुत शान्ति से सभा में बैठे रहे और उठकर बातचीत में बताया कि वह बहुत प्रभावित हुए हैं। सभापति जी का वह दिल से धन्यवाद कर रहे थे।

सभापति जी ने सबका धन्यवाद किया और देव आरती का गान करके चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त की। सभा ख़त्म होने पर सब बहुत उत्साहित थे।

परिवार की तरफ से 5100 रूपये दान मिला। परिवार की तरफ से सब हाजरीन को बहुत बढ़िया लंच दिया और सबको मिठाई के डिब्बे देकर विदा किया।

गुरू के कारज का संदेश बहुत जनों तक पहुँचा।

(एक हाजरीन)

संगरूर में सत्संग

स्थानीय डाक्टर नवजोत सिंह कालड़ा, सपुत्र श्रीमान सीता राम जी, और अन्य साथियों की इच्छा अनुसार पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी देव धर्म की ओर से सत्संग रखवा गया। श्रीमान सीता राम जी के परिवार ने और उनकी सपुत्रियों के परिवारों ने इस सत्संग की तैयारी बड़े उत्साह और संग्राम से की। देव धर्म मन्दिर की और सारे स्थानों की खूब सफाई और धुलाई की गई। मन्दिर में बैठने के लिए कुर्सियों, गद्दों और सफेद चादरों आदि की बिछाई उत्तम ढंग से की गई। खाने का प्रबन्ध के लिए तीन चार जनों की पार्टी का प्रबन्ध किया गया। यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध, मन्दिर की बिल्डिंग में बिस्तरे चारपाईयों का प्रबन्ध किया गया।

इस सत्संग की सूचना जनवरी के मासिक पत्रों में दी गई थी। फोन द्वारा भी अधिकारी जनों को प्रेरणा की गई। इसके फलस्वरूप चण्डगीढ़, दड़बा, लखनऊ, यमुना नगर, मोगा, गोनियाना, पदमपुर, गंगानगर, करनाल, कल्याण, मल्लेका आदि स्थानों से 16 - 17 धर्म सम्बन्धी पहुँचे। सभाएं कराने और भजन गाने के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी समय पर पहुँच गए थे। श्रीमान सीताराम जी का सारा परिवार, बेटियों के परिवार, उनके भाईयों के परिवार और स्थानीय सेवक, श्रद्धालु, कुछ नये जन सभाओं में शामिल होने के लिए पहुँचते रहे। कुल 35 - 40 के लगभग हाज़री होती रही।

27 - 1 - 2017, पहली सभा 8.30 बजे रात :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह ने दो भजनों के गान के बाद, अर्चन किया और बताया कि मनुष्य को उसके भाव ही चलाते हैं, इसमें किसी और देवी, देवता या ईश्वर का हाथ नहीं। बहुत प्रभावशाली और ठोस प्रसिद्ध घटनाओं द्वारा इस सचाई को पेश किया। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव अधिकारी मनुष्यों को उनके भावों की भयानक और विनाशकारी तस्वीर दिखाकर और अपना बल प्रदान करके अधिकारी आत्माओं के ऐसे भावों को बदलकर उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। उच्च परिवर्तनों के सुन्दर दृष्टांत पेश किए। यह बताया कि हम सबको अपने परिचालक भावों को जानने की आवश्यकता है। बहुत अच्छा वातावरण बना, सबका ध्यान अपने भावों की ओर जाने की प्रेरणा मिली। जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

28 - 1 - 2017, सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने पहले पूजनीय भगवान की छवि का अर्चन किया, फिर जगदीष जी ने "शरण तुमरी मैं आया हूँ, बचाओ मुझको हे सत्गुरू" भजन गाया।

उसके बाद सभापति जी ने बताया कि शारीरिक रूप से अपंग होना सब को दिखाई देता है। उसके घाटे, हानि और दुख कुछ समझ में आता है। गुरू महाराज ने बताया है कि मेरा सेवक बनना और कुछ मिथ्या, पाप को छोड़ देने से मनुष्य कोई बहुत ऊंचा नहीं बन जाता। उसके केवल कांटे ही झड़ते हैं। धर्म प्राप्ति और भी आगे की बात है। गुरू महाराज ने कुछ अति आवश्यक हार्दिक शक्तियां बताई हैं, मनुष्य उनके बिना आत्मिक तौर पर अपंग होता है। पढ़ लिखकर, धन कमाकर, जगत प्रसिद्ध होकर, उच्च,

पदवियां पाकर भी उच्च शक्तियों के बिना मनुष्य अपंग ही रहता है। स्वयं दुख भागता है और दूसरों को दुखी करता है। कड़वाहट और टकराहट का जीवन बसर करके अपना जीवन बर्बाद करता है। उच्च भावनाओं अर्थात श्रद्धा, सन्मान की अच्छा बनने के लिए नितान्त आवश्यकता है। श्रद्धा भाव के न होने से जो हानियां होती हैं, उनका घटनाओं द्वारा ब्यान किया गया।

इस प्रकार कृतज्ञता के बिना मनुष्य पशुओं से भी अधिक नीच बन जाता है। कृतज्ञता के ज़रूरी अंगों को विस्तार पूर्वक बताया। इसके बिना मनुष्य खुदगर्ज़, कमीना, पापी और राक्षस बन जाता है। स्वंय नारकीय जीवन बसर करता है, और सम्बन्धों में भी कैसे नर्क पैदा करता है, उसका उदाहरणों के द्वारा पेश किया गया।

3.30 बजे दुपहिर :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन के बाद श्रीमान जी ने साथी सेवकों को प्रश्न पूछने के लिए कहा। पहला प्रश्न प्रिंसीपल दीवान जी ने किया, उनके प्रश्न का उचित उत्तर दिया गया। फिर श्रीमान बी.पी. सिंह जी ने प्रचार के तरीके पेश करने की कोशिश की, जिससे ज़्यादा लोगों तक भगवान का कारज पहुँच सके। सभापति जी ने उनके जोश और उत्साह की सराहना की। उन्होंने अपनी तरफ से इश्तिहार बांटने अख़बारों में सूचना देने, मुनादी आदि करने और स्कूलों, कालिजों तक सम्पर्क करना आदि। फिर श्रीमान जगदीष जी ने और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस विषय में सहायक होने के सम्बन्ध में अपने विचार बताए। एक सत्संगी ने अपना तज़रबा बताया कि "उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं" उन्होंने यह भी बताया कि मैंने एक विशेष प्रचारक को अपने पास बुलाया और सारा ज़ोर लगाकर 100 के करीब जन आए, सुबह की सभा में केवल 17 रह गए। कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। सभापति जी ने बताया कि समाज का प्रचार करने से पहले अपने जीवन का फ़िकर करने की आवश्यकता है। जीवन उच्च बनाने के लिए कड़े साधनों की आवश्यकता है। साधनों में से गुज़रकर अवश्य जीवन उच्च बनेगा। पांच जनों ने बताए हुए साधन करने की प्रतिज्ञा की।

राज 8 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

"शरण तुमरी न आता मैं, तो क्या होता, कहां होता" नामक भजन का गान किया गया। भजन के बाद श्रीमान जी ने पूजनीय भगवान की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा के विषय में बताया। यह शिक्षा मानवता के लिए अन्मोल वरदान है। उन्होंने कई नवीन और कई एतिहासिक घटनाओं द्वारा यह रोशन करने का भरपूर यत्न किया कि सब सम्बन्धों में उच्च भावों द्वारा व्यवहार करना ही धार्मिक गतियां हैं। गुरू महाराज की ज्योति जो सचाईयां नज़र आती हैं, उसके बिना नहीं। एक स्वार्थी परिवार की घटना सुनकर भी मुझे स्वार्थी परिवार की बुराई का पता नहीं लगा सका था, परन्तु जब पिता जी ने उनके स्वार्थ का करूप रूप देखा और मुझे बताया और दुखी हो रहे थे, तब मैंने उस घृणित व्यवहार का असल रूप देख सका। उच्च भाव मनुष्य को कुर्बानी और त्याग के लिए प्रेरित करते हैं। कई भाई बहनों की त्याग वा कुर्बानी की घटनाएं पेश की। किस प्रकार एक भाई ने अपने भाई को गुर्दा दिया, एक भाई अपने भाई के स्थान पर जेल जाने को तैयार हो गया। एक पोते ने अपनी जो दादी की सेवा की,

उससे सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा होता है। उन्होंने अपना माता पिता, भाई बहन, पत्नी और बच्चों विद्यार्थियों के सम्बन्ध में बदले हुए व्यवहार का वर्णन किया। इसके लिए गुरू महाराज का शुक्राना किया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी अपने ब्यान में कहा कि पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि "मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूँ" उन्होंने केवल कहा ही नहीं, स्वर्ग लाकर दिखाया है। एक दुखिया देवी ने स्वर्गीय जीवन जीया, उसने अपनी पगली बहन, अपने गुस्सैल पति और घृणा करने वाली सास और पिता के सम्बन्ध में स्वर्गिय व्यवहारों का उदाहरण पेश किया, श्रीमान जी ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सारा ब्यान किया। उनकी सास ने तकरीबन 30 वर्ष घर में नहीं घुसने दिया था। एक बजुरग साथी सेवक ने श्रीमान बलदेव सिंह जी के पास अपने पिता के सम्बन्ध में दुर्व्वहारों का बहुत दुख के साथ ब्यान किया। अपने उपकारी को ईट मारकर घृणा भरा व्यवहार अब बहुत दुखी कर रहा है।

29-1-2017, सुबह 9 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन: बचाना भरती रूहों को, मिशन अपना बनाया है, श्रीमान जी ने प्रभावशाली ढंग से गाया। उसके बाद सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का विकास पशु जगत से हुआ है, परन्तु उसकी बुद्धि विकसित हो गई है। पशुओं को निम्न प्रकार का ज्ञान होता है। परन्तु मनुष्य को और ज्ञान तो बहुत है, परन्तु अपने विषय में बहुत कम ज्ञान है। उसे अपने शरीर की रक्षा और विकास का भी कम ज्ञान है। वह अपने स्वास्थ्य के नियमों को जानना चाहता भी नहीं। क्योंकि उसके सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं और उसे अन्धेरे में ही रखते हैं। गुरू महाराज के विषय में तो मनुष्य को बहुत ही कम ज्ञान वा समझ है। हमदर्द, दयावान लोगों को दूसरों के दुख नज़र आते हैं। उसे दूर करने के लिए कुछ संग्राम भी करते हैं। गुरू महाराज ने एक नई दुनिया बसाई है, जो औरों को नज़र नहीं आती। उन्होंने देखा है रूहें आत्मिक रोगों से रोगी होकर मर रही हैं। देव समाज के सेवक भी शरीर के नियमों को तो कुछ समझ लेते हैं, पर आत्मा की मौत नज़र नहीं आती। शरीर के विकास के लिए जिम बने हुए हैं और बढ़ रहे हैं, परन्तु मुफ्तख़ोरी, स्वार्थ से आत्मा मरती है, यह केवल देव ज्योति में ही नज़र आता हैं। गरीबी, लड़ाई आदि द्वारा दुखों का कारण आत्मा के रोग हैं। अपनी जीवनी शक्ति और आत्मा को जानना मनुष्य के लिए परम अवश्यक है। देवात्मा की देव ज्योति में नज़र आता है, हमें भाव चलाते हैं। धन का पागलपन, कपड़े, समान, जेवर, ज़मीन में सुख नहीं।

फिर श्री सभापति जी ने बताया कि जैसे भूला विसरा खेत उजड़ जाता है, उसी प्रकार जीवन को विसार कर आत्मा बर्बाद हो जाता है। धन कमाने में अपनी सेहत का भी ध्यान न रखना रोग है, पागलपन है। कई घटनाओं द्वारा व्याख्या की।

फिर श्रीमान सीता राम जी के सुन्दर गुणों, का और उनमें जैसा उच्च परिवर्तन पैदा हुआ उसका ब्यान किया। उन्होंने अपने परिवार के विकास के लिए विद्या और धर्म संगत देकर उनका हित किया। उनके बेटे, बहु, बहनों और बहनोईयों में जो मेल मिलाप है, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली है। इसमें 70 के लगभग जन शामिल हुए। 1000 रूपये दान प्राप्त हुआ। 200 रूपये के लगभग किताबों की बिक्री हुई।

एक हाजरीन

ईमानदारी हो तो ऐसी

स्वर्गीय डाक्टर अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति के समय के उनके सैक्रटरी मिस्टर पी, एम, नैयर I.A.S. आफीसर ने उनके विषय में लिखा है: -

डी. डी. पोदीगाई ने सैक्रटरी साहिब से एक interview की जो, T.V. पर Telecast भी की गई। नैय्यर साहिब संक्षेप से उसके विषय में लिखते हैं, लिखते समय भी उन्होंने कहा है कि उनका गला भर भरकर आता है, कलाम साहिब की दया, ईमानदारी को याद करके।

1) डा० कलाम को जैसा कि रिवाज़ है, जब विदेशों में जाते तो उन्हें बहुत कीमती तोहफे मिलते, यदि उन तोहफों को मना करते थे तो यह उस देश की तौहीन समझी जाती थी और भारत के लिए भी embarrassment थी। वह उस तोहफे को स्वीकार कर लेते और जब वापिस आते तो उस तोहफे की तस्वीर खींची जाती और उसको catalogued करके उसके Archives को दे दिया जाता, उसके बाद उन्होंने कभी उन्हें नहीं देखा। उन्होंने तोहफों में कभी एक पैंसल तक नहीं ली, जब उन्होंने राष्ट्रपति भवन को छोड़ा।

2) 2002 में जब रमज़ान का महीना था, कोई जुलाई अगस्त में तो नियमित रूप से राष्ट्रपति ने एक इफतार पार्टी देनी होती थी। डा० कलाम ने नैय्यर साहिब से पूछा कि हमें यह पार्टी क्यों देनी चाहिए, जो आएंगे उनके पास बहुत खाने पीने को है? फिर उन्होंने पूछा कि इस पार्टी पर कितना खर्च आता है, उन्होंने कहा कि लगभग 22 लाख रूपये। डाक्टर कलाम ने कहा कि यह सारी रकम कुछ चुने हुए आनाथालयों में बच्चों के खाने, उनके कपड़ों और कम्बलों आदि पर खर्च कर दो, जब अनाथालयों का चुनाव कर लिया गया, तो डाक्टर कलाम ने नैय्यर साहिब को अन्दर बुलाया और अपने अकाऊंट में से एक लाख रूपये का चैक और दे दिया और कहा कि इसके विषय में किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है, जब मैंने कहा कि सर मैं बाहर जाकर सबको बता देता हूं। बेशक वह पक्के मुसलमान थे, परन्तु जब तक वह प्रैज़ीडैंट रहे, राष्ट्रपति भवन में कोई इफ़तार पार्टी नहीं हुई।

3) डाक्टर कलाम को यैस मैन बिल्कुल पसन्द नहीं थे, एक बार भारत के चीफ जस्टिस आए और वह कलाम साहिब ने किसी विषय पर अपने विचार व्यक्त किए और नैय्यर साहिब को पूछा क्या तुम इस बात पर सहमत हो? तो नैय्यर साहिब ने झट से कह दिया, "नहीं, सर," मैं इस बात से सहमत नहीं हूं।

चीफ जस्टिस हक्के बक्के रह गए, उन्हें अपने कानों पर विश्वास ही नहीं होता था कि इस प्रकार खुले रूप से कोई प्रैज़ीडैंट को असहमति ज़ाहिर कर सकता है। नैय्यर साहिब ने उन्हें बताया कि बाद में प्रैज़ीडैंट साहिब मुझसे पूछेंगे कि मैं सहमत क्यों नहीं। यदि मेरा लौजिक 99% सही हुआ, तो वह अपना फैसला बदल लेंगे।

4) डाक्टर कलाम ने एक बार अपने 50 सम्बन्धियों को राष्ट्रपति भवन में निमन्त्रित किया। उन्होंने शहर घुमाने के लिए उनके लिए सब प्रबन्ध किया, जिसका खर्चा उन्होंने स्वंय दिया। आफिस की गाड़ी का प्रयोग नहीं किया। उनके ठहरने, खाने पीने

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

का सारा हिसाब पूछा जो 2 लाख के लगभग था, उन्होंने अपने अकाऊंट से दिया।

भारत के इतिहास में किसी ने ऐसा नहीं किया।

आगे देखो ईमानदारी की इन्तहा। डाक्टर कलाम के बड़े भाई आकर उनके साथ ठहरे, उनके ही कमरे में, क्योंकि वह चाहते थे कि वह उनके साथ ही ठहरें, वह एक हफ़ता रहे, जब वह चले गए डाक्टर कलाम उस कमरे का किराया भी देना चाहते थे जिसमें उनके साथ भाई ठहरे थे,, जो सरकार की ओर से उन्हें मिला हुआ था। पर स्टाफ नहीं माना कि ईमानदारी की भी हद होती है, हम यह सहन नहीं कर सकते।

जब कलाम साहिब राष्ट्रपति भवन को छोड़ रहे थे, उनका समय हो गया था, प्रत्येक स्टाफ मैंबर उन्हें सन्मान देने के लिए पहुँचे, नैय्यर साहिब अकेले पहुँचे क्यों कि उनकी पत्नि के फ्रैकचर हुआ था और वह बिस्तर पर थी। डाक्टर कलाम ने पूछा कि आपकी पत्नि क्यों नहीं आई? नैय्यर साहिब ने बताया कि उनका Accident हो गया था और वह बिस्तर पर हैं। अगले दिन नैय्यर साहिब ने देखा कि बहुत से पुलीस वाले उनके घर के चारों तरफ खड़े हैं, तो उन्होंने पूछा कि क्या हुआ? उन्होंने बताया कि भारत के राष्ट्रपति आपको मिलने के लिए आए हैं। वह घर में आए, मेरी पत्नि के साथ कुछ देर बातें की, और चले गए। नैय्यर साहिब कहते हैं कि किसी देश का प्रैज़ीडैंट एक IAS officer के घर इतनी छोटी सी बात के लिए नहीं आएगा। नैय्यर साहिब ने "Kalam Effect" पुस्तक में उनके विषय में और बहुत कुछ लिखा है।

ऐसी ईमानदारी की घटनाएं पढ़कर, हमे अपने अन्दर झांके कि देवात्मा गुरू के शिष्य होकर हम कहां खड़े हैं, देवात्मा के standard पर हम कहां तक खरे उतरते हैं। उन्हें तो ऐसे अद्वितीय गुरू की शरण भी नहीं मिली थी। जैसे कलाम साहिब ने देश के पैसे पर अपना कोई अधिकार नहीं समझा, क्या हम अपनी समाज के पैसे का अपने लिए या अपने भाई बन्धुओं के लिए दुरोपयोग तो नहीं कर रहे, यदि कर रहे हैं, तो हम गुरू के पहली श्रेणी के सेवक कहलाने के भी योग्य नहीं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts